navabharat.com/epaper-gwa

क्लोन जर्नल, एक प्रामाणिक जर्नल की मिरर इमेज है : डॉ . नरूला

नवभारत न्यूज

ग्वालियर 13 जनवरी. एमिटी विश्वविद्यालय में आयोजित फैकल्टी डेवलपमेंट प्रोग्राम में डॉ सुमित नरूला चेयरमैन, सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉरमेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश ने पब्लिकेशन एथिक्स एंड प्रिडेटरी पब्लिकेशन पर विस्तार से बताया। उन्होंने बताया कि फेक, प्रिडेटरी और क्लोन जर्नल्स की पहचान करना और शोध कार्य की सुरक्षा शिक्षाविदों और शोधार्थियों के लिए चिंता का विषय है। इस अवसर पर माननीय कुलपति लेफ्टीनेंट जनरल वीके शर्मा, एवीएसएम (रिटायर्ड) और प्रो. वाइस चांसलर प्रोफेसर डॉ. एमपी कौशिक ने विशेष रूप से अपने विचार व्यक्त किए।

डॉ. सुमित नरूला, डिप्टी डीन रिसर्च एंड साईटेशन ने अपने संबोधन में डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉर्मेशन से रिसर्च और समाज पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव पर विस्तृत जानकारी साझा की। उन्होंने रिसर्च जर्नल्स के क्षेत्र में इस्तेमाल किये जाने वाली टर्मिनोलॉजी ई-पैक्ट फैक्टर, साईटेशन इंडैक्स, एच-इंडैक्स, जीआईएफ के बारे में विस्तार से समझाया।

डॉ नरूला ने स्लाइड शो के द्वारा फैक, प्रिडैटरी व कलोंड जर्नल्स इन एकेडमिक पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की और बताया कि क्लोन किए गए जर्नल वेब पेज, एक प्रामाणिक जर्नल की मिरर इमेज है, जो वैध जर्नल्स के शीर्षक और आईएसएसएन का फायदा उठाते हैं। वहीं प्रिडेटरी जर्नल्स के विपरीत, क्लोन जर्नल्स में लेखकों के शोध कार्य स्वीकार करने की अधिक संभावना होती है। डॉ. नरूला ने कहा कि कुछ संपादक ई-मेल के माध्यम से लेखकों व शोधकर्ताओं से संपर्क करके रिसर्च पेपर को एक निर्धारित शुल्क के बदले प्रिडेटरी क्लोन जर्नल्स में प्रकाशित करने का दावा करते हैं।

गौरतलब है अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित और गूगल द्वारा सर्टिफाइड, डॉ सुमित नरूला को डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉरमेशन के क्षेत्र में अनेक नवाचार और रिसर्च में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया है। इस अवसर पर एमिटी के डिप्टी प्रो-वाइस चांसलर प्रोफेसर (डॉ.) अनिल वशिष्ठ, रजिस्ट्रार श्री राजेश जैन, एम.वेंकटाद्री सहित सभी विभागाध्यक्ष, संकाय सदस्य और रिसर्च स्कोलर्स मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

सुनील गोयल

अनुसंधान उत्कृष्टता को बढ़ावा देने कार्यशाला आयोजित

नवभारत न्यूज

ग्वालियर 5 फरवरी. शिक्षाविदों में अनुसंधान उत्कृष्टता को बढ़ावा देने साउथ एशिया एल्सेवियर रिसर्च सॉल्यूशन्स और हायर एजुकेशन कमीशन पाकिस्तान के सहयोग से पाकिस्तान में 2-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। ऑनलाइन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि हायर एजुकेशन कमीशन पाकिस्तान की निदेशक सुश्री नोशाबा अवाइस और सौरभ शर्मा वाइस प्रेसीडेंट, साउथ एशिया एल्सेवियर रिसर्च सॉल्यूशन्स ने संबोधित किया।

इस मौके पर आमंत्रित वक्ता

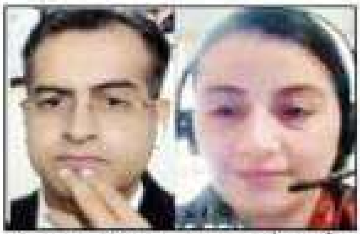

(डॉ.) सुमित नरूला चेयरमैन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉरमेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश ने हाऊ टू कैच फेक, प्रिडेटरी व कलोंड जर्नल्स इन एकेडमिक पर व्याख्यान दिया। उन्होंने उन्होंने शोधकर्ताओं को फर्जी जर्नल्स पब्लिशर्स के झांसे में नहीं आने की बात कही। डॉ नरूला ने बताया कि प्रिडेटरी जर्नल्स के विपरीत, क्लोन जर्नल्स में लेखकों के शोध कार्य स्वीकार करने की अधिक संभावना होती है। उन्होंने रिसर्च जर्नल्स के क्षेत्र में इस्तेमाल किये जाने वाली टर्मिनोलॉजी ई- पैक्ट फैक्टर, साईटेशन इंडेक्स, एच-इंडेक्स, जीआईएफ पर विस्तृत जानकारी दी।कार्यक्रम में एल्सेवियर के वाइस प्रेसीडेंट सौरभ शर्मा और सीनियर कस्टमर कंसल्टेंट विशाल गुप्ता ने बताया कि कार्यशाला का उद्देश्य परिपक्व और सस्टेनेबल सोसाइटी के निर्माण में कौशल और ज्ञान के महत्व को रेखांकित करना है।

इस मौके पर पाकिस्तान हायर एजुकेशन से डॉ. डब्ल्यू महमूद, डाइरेक्टर अल खावरीज़मी, यूनिवर्सिटी ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी लाहौर, डॉ. एन हसन, आईआईटी दिल्ली, डॉ. एम जहांगीर ,यूनिवर्सिटी ऑफ हरिपुर ने रिसर्च प्लानिंग, आवश्यक उपकरण, डेटाबेस, रिसर्च मेट्रिक्स के महत्व पर प्रकाश डाला। वहीं साइंस डायरेक्ट एजुकेशनल एंड रिसर्च यूज केस, इम्पोर्टेंस ऑफ द बेटर टुगेदर कॉन्सेप्ट, मल्टी-डिसिप्लिनरी कंटेंट एक्सेस के फायदे, कैपिसिटी बिल्डिंग और इसके परिणामों पर शोधकर्ता और लाइब्रेरियन के नजरियों पर चर्चा की गई ।

सुनील गोयल

पत्रिका plus
gwalior. sunday 06/02/2022 patrika.com/entertainment

एमिटी के डॉ. नरूला ने पाकिस्तान में दिया व्याख्यान

पत्रिका plus रिपोर्टर

ग्वालियर. शिक्षाविदों में अनुसंधान उत्कृष्टता को बढ़ावा देने साउथ एशिया एल्सेवियर रिसर्च सॉल्यूशन्स और हायर एजुकेशन कमीशन पाकिस्तान के सहयोग से पाकिस्तान में अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला हुई। ऑनलाइन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि हायर एजुकेशन कमीशन पाकिस्तान की निदेशक नोशाबा अवाइस और सौरभ शर्मा, वाइस प्रेसीडेंट साउथ एशिया एल्सेवियर रिसर्च सॉल्यूशन्स ने संबोधित किया। इस मौके पर आमंत्रित वक्ता के रूप में डॉ. सुमित नरूला, चेयरमैन सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉर्मेशन एमिटी यूनिवर्सिटी ने हाऊ टू कैच फैक, प्रिडैटरी व कलोंड जर्नल्स इन एकेडमिक पर व्याख्यान दिया।

Business Standard

Menace of predatory, cloned journals more rampant in post-pandemic world

Among the highest number of victims from South Asian countries, particularly India, say academicians

Ritwik Sharma | New Delhi October 25, 2021 Last Updated at 17:53 IST

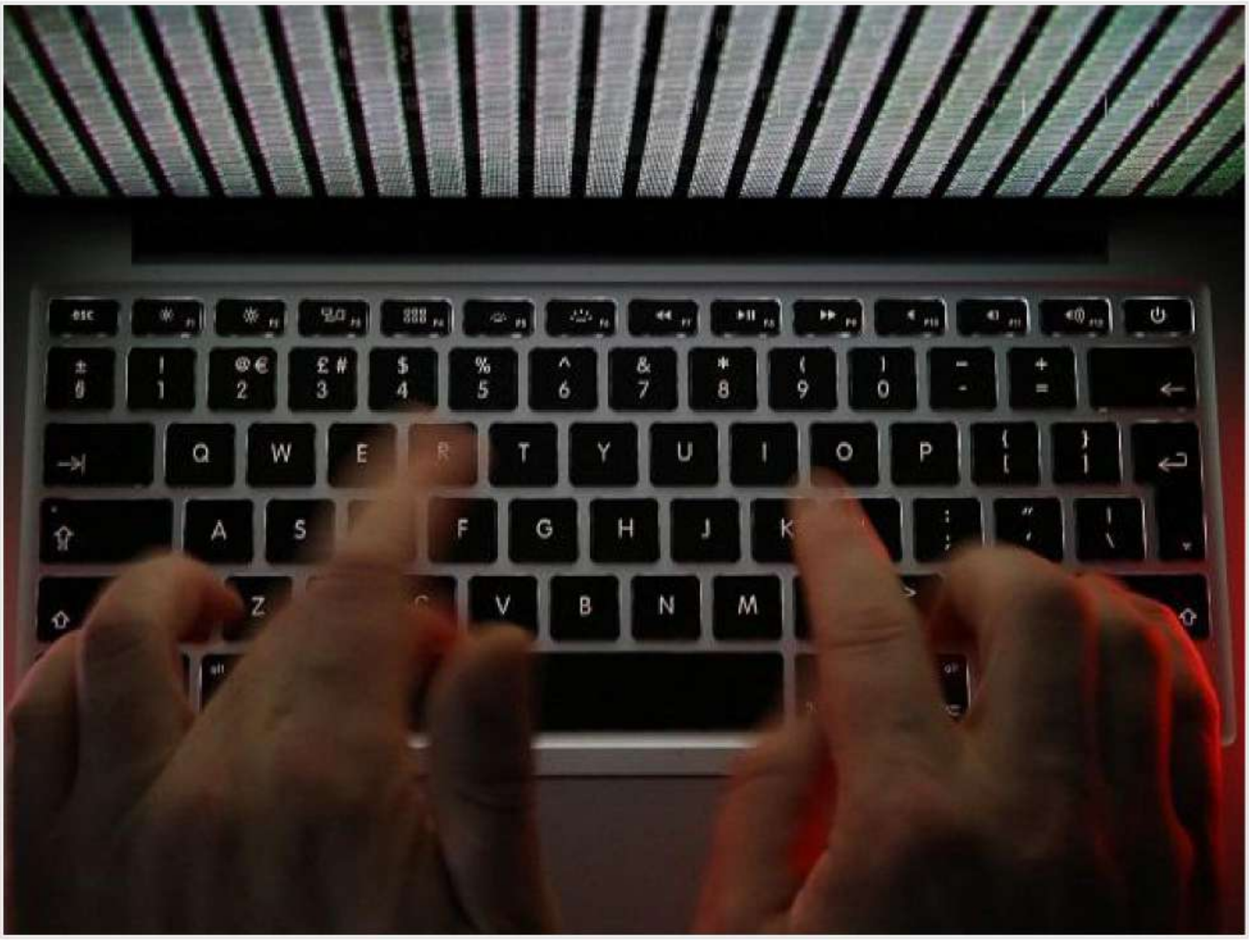

Representational image (Photo: Bloomberg)

Two years ago, a Pune-based PhD student who is enrolled at a university in Madhya Pradesh submitted a paper to a social science journal that promised to upload it online. She only had to pay Rs 5,000 to publish the paper, and immediately received a PDF file of her paper and a certificate via mail. "But later when I searched online, I could neither find the paper nor the journal's website," says the 32-year-old who does not want to be identified. It's one of thousands of examples of researchers falling prey to fake, cloned or predatory journals — a ...

https://www.business-standard.com/article/economy-policy/menace-of-predatory-cloned-journals-more-rampant-in-post-pandemic-world-121102501031_1.html

Hijacked journals 'siphon millions of dollars' from research

International action needed to eliminate 'cloned journals' that prey on early career researchers, says Indian research integrity advisor

August 30, 2021

Jack Grove (/content/jack-grove-0)

Twitter: @jgro_the (https://twitter.com/jgro_the)

Source: istock

Fraudulent journals that hijack the identity of legitimate scholarly publications are becoming one of the biggest problems for India's research system, with millions of dollars a year being "siphoned" into international publishing scams, a research integrity expert has warned.

Sumit Narula, deputy dean of research (publications and citations) at Amity University (https://www.timeshighereducation.com/world-university-rankings/amity-university-uttar-pradesh), which has campuses in Mumbai, Kolkata and Jaipur, told *Times Higher Education* that he was alarmed by the rising numbers of Indian scholars falling for so-called "hijacked" or "cloned" journals, in which fraudsters create near-identical domain names to established journals and charge fees of up to US$1,000 (£728) for "publication" in these outlets without peer review or editing.

"It is alarming that so many young research scholars are being fooled," said Dr Narula, who runs workshops to help early career researchers spot predatory journals, with Indian PhD candidates required to take mandatory training (https://www.ugc.ac.in/pdfnews/9836633_Research-and-Publication-Ethics.pdf) on this subject since 2019.

"It is probably costing India's research system millions of dollars – money which is being siphoned out of our system," he added.

While the practice was first identified back in 2011, hijacked journals have risen to prominence in recent months after Anna Alkabina, a research fellow at Free University of Berlin (https://www.timeshighereducation.com/world-university-rankings/free-university-berlin), discovered that almost 400 papers from three hijacked journals (https://retractionwatch.com/2021/08/16/who-covid-19-library-contains-hundreds-of-papers-from-hijacked-journals/) featured in the World Health Organisation's official library of Covid-19 papers, including 70 papers from India.

Close

Several European journals, including *Talent Development and Excellence* (hijacked as the *Journal of Talent Development and Excellence*), the *Transylvanian Review* and the *Annals of the Romanian Society for Cell Biology* have also been cloned in recent years, with the fraudulent publications being listed on Scopus, owned by Elsevier, explained Dr Alkabina in a *Retraction Watch* *(https://retractionwatch.com/2021/05/26/how-hijacked-journals-keep-fooling-one-of-the-worlds-leading-databases/)* article in May.

For the latter hijacked journal, which charges $200 an article, more than 5,000 papers were published in 2021, of which 1,458 came from India-based authors, she discovered, adding that hundreds of hijacked journals are thought to exist.

"India is most affected by this because people are keen to get a PhD but not so worried about doing the research required or where it is published, so long as it is in a journal that meets official requirements," said Dr Narula. India's University Grants Council holds an approved list of journals where scholars are allowed to publish, where cloned journals have appeared.

"This lackadaisical attitude is partly why it is happening, but there is another 50 per cent of scholars who are genuinely fooled because they are not checking [whether] the journal is of poor quality," said Dr Narula, who is editor-in-chief of the Scopus-indexed *Journal of Content Community and Communication*.

Close

While cloned journals often make extensive efforts to replicate the online content (https://arxiv.org/abs/2101.01224) of genuine publications, there are telltale signs (https://www.youtube.com/watch?v=9KAZpKP5D4E) of fraudulent publications, he said. These include the failure to mention submission deadlines or the contact details of the publisher, promises to publish research papers in a short time span such as 48 hours, misleading profiles of editorial board members and ambiguous descriptions of a journal's impact factor.

While increased researcher education was needed to improve awareness, internationally coordinated action was also required to close down hijacked journals more swiftly, he added.

"They are often based in India, but the domain names are also registered in Morocco, China, Iceland and Singapore – these are illegal websites that exist for one or two years before they are shut down when their purpose of making money is done, but I think other countries can do more," he said.

jack.grove@timeshighereducation.com (mailto:jack.grove@timeshighereducation.com)

BVIMSR's virtual RDP on identification of fake publications well received internationally

By Ashok Dhamija

Over 650 participants from a dozen countries across four continents took part in a virtual International Research Development Program (RDP) that was organised by Navi Mumbai based Bharati Vidyapeeth's Institute of Management Studies and Research (BVIMSR), on the theme 'Identification of Fake, Forged, Cloned and Predatory Journals'.

Dr. Sumit Narula, a Ph.D in Electronic Media and Conflict Resolution from Punjab University, Chandigarh, who was the key speaker for the online convention, provided genuine insight on this burning and provoking issue for the benefit of academicians, research scholars, editors and publishers alike.

Dr. Sumit Narula shared his valuable experience on the topic

In his sharing he threw light on the world of academic publishing and the rising number of national and international journals (print and online) for authors to publish their work every year. This though beneficial also places greater responsibility on the authors to avoid publishing in some predatory journal. The proliferation of these fake or cloned journals over the past few years has led to frustration among authors and writers whose works if published are not accepted and also leaves them poorer financially.

Dr. Narula who is currently the Deputy Dean Research (Publications and Citations) at Amity University Gwalior and is also the Editor in Chief of the bi-annual SCOPUS indexed and UGC CARE listed journal, who has taken several workshops on this burning topics, also shared his varied experiences for the identification of these unethical traps, used by predatory journals in the face of such challenges.

Some of these may included, types of journal which mostly would be multidisciplinary in nature, compared to one that caters to a theme or some industry-related one or absence of any physical address of the journal publisher or fast tracking the dissemination of the author without checking articles for quality and legitimacy instead of the one followed by high-quality academic journals to publish articles which are subjected to a proper peer review or accepting plagiarised articles or creating cloned websites which become defunct after few months etc.

Earlier the convention was inaugurated by Dr. Anjali Kalse, Director of BVIMSR who in her inaugural speech highlighted some of the varied techniques of trapping adopted by the miscreants and also thanked Dr. Vilasrao Kadam, Regional Director, Bharati Vidyapeeth Belapur campus for providing all the necessary support for smooth conduct of the convention.

Prof. Satya S. Ranjan who along with Dr. Uma Durgude, and Prof. Sameer Sonawane who were part of the organising team for this RDP, stated that this online event was conceptualized couple of month back. The same was well appreciated by one and all from across 12 countries and many participants in their feedback urged the institute to organize such programs on regular intervals for the benefit of academicians and research enthusiasts.

School of Management sciences Bahra University organised workshop

4 days ago Himachal Tonite

School of Management sciences Bahra University organised workshop for faculty and students on How to identify fake predatory or cloned journals.

Bahra University school of Management sciences organized a one day workshop on How to identify fake predatory and cloned journals.This guest lecture was specially organised for faculty and students of University keeping in view their future research endeavours.

The session was taken by Dr. Sumit Narula Director Amity school of communication Madhya Pradesh.Dr. Narula is well renowned researcher , editor ,writter in the field of Media studies.He is Allumni of Punjab University and and is rigrously working on debunking of fake news.

Dr. Narula is also running an center for detection of fake news , properties and content available on internet. In this technology pro era under this center they are training Goverment , police, administration,educational institutions for the same. This session was joined by several faculty members to attain knowledge and be aware of fake content floating on web.Dr. Narula emphasized that post COVID scenario in education sector and rigorous use of internet is part of life in this technology pro era though the faculties should be also aware of. malfunctioned properties so that the research work should not be impacted. Session was hosted by Dr.salochna HOD School of Management Bahra University.

On this ocassion PR Bahra University Gaurav Bali added that University always focus on the Faculty development programmes to enhance the quality and awareness amongst them so that the same is always floated to students.

Registrar Bahra University Mr Vineet kumar was also present.

https://himachaltonite.com/himachal/school-of-management-sciences-bahra-university-organised-workshop/

School of Management sciences Bahra University organises workshop on How to identify fake predatory or cloned journals.

July 16, 2021

Bahra University school of Management sciences organized a one day workshop on How to identify fake predatory and cloned journals.This guest lecture was specially organised for faculty and students of University keeping in view their future research endeavours. The session was taken by Dr. Sumit Narula Director Amity school of communication Madhya Pradesh.Dr. Narula is well renowned researcher , editor ,writter in the field of Media studies.He is Allumni of Punjab University and and is rigrously working on debunking of fake news.

Dr. Narula is also running an center for detection of fake news , properties and content available on internet. In this technology pro era under this center they are training Goverment , police, administration,educational institutions for the same. This session was joined by several faculty members to attain knowledge and be aware of fake content floating on web.Dr. Narula emphasized that post COVID scenario in education sector and rigorous use of internet is part of life in this technology pro era though the faculties should be also aware of. malfunctioned properties so that the research work should not be impacted. Session was hosted by Dr.salochna HOD School of Management Bahra University.

On this ocassion PR Bahra University Gaurav Bali added that University always focus on the Faculty development programmes to enhance the quality and awareness amongst them so that the same is always floated to students. Registrar Bahra University Mr Vineet kumar was also present.

https://crazynewsindia.com/school-of-management-sciences-bahra-university-organises-workshop-on-how-to-identify-fake-predatory-or-cloned-journals/

एमिटी में फेक न्यूज पर आयोजित हुआ वेबिनार

ग्वालियर। सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉर्मेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश में अवॉइडिंग प्रिडेटरी पब्लिकेशन्स व्हाट रिसर्चर्स कैन डू विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक एवं रिसोर्स पर्सन डॉ. सुमित नरूला, निदेशक एमिटी स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन ने हाऊ टू कैच फैक प्रिडैटरी व कलोंड जर्नल्ज इन एकैडमिक्स विषय पर विस्तार से बताया। उन्होंने उदाहरणों के साथ बताया कि क्लोन किए गए जर्नल वेब पेज एक प्रामाणिक जर्नल की मिरर इमेज है, जो वैध जर्नल्स के शीर्षक और आईएसएसएन का फायदा उठाते हैं। प्रिडेटरी जर्नल्स के विपरीत, क्लोन जर्नल्स में लेखकों के शोध कार्य स्वीकार करने की अधिक संभावना होती है। डॉ. नरूला ने फेक जर्नल्स की सटीक जानकारी साझा करते हुए कहा कि कुछ संपादक एक संशोधित ई-मेल संदेश के माध्यम से लेखकों व शोधकर्ताओं का सक्रिय रूप से संपर्क करते हैं और उन्हें प्रिडेटरी क्लोन जर्नल्स में प्रकाशित करने का दावा करते हैं। उन्होंने बताया कि लेखकों और रिसर्चरों को ऐसे अनुरोधों द्वारा एक ओपन एक्सेस से प्रकाशन शुल्क का भुगतान करने के लिए प्रेरित किया जाता है, वहीं उन्हें यह विश्वास दिलाने में सफल रहते हैं कि उनका शोध कार्य एक प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित होने वाला है। उन्होंने रिसर्च जर्नल्स के क्षेत्र में इस्तेमाल किये जाने वाली टर्मिनोलॉजी ई पैक्ट फैक्टर, साईटेशन इंडैक्स, एच-इंडैक्स, जीआईएफ के बारे में विस्तार से समझाया।इस अवसर पर इस अवसर पर कुलपति ले टीनेंट जनरल वीके शर्मा, एमिटी एसटीआईएफ के अध्यक्ष प्रोफेसर एस सेल्वामूर्ति, प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर (डॉ.) एमपी कौशिक विशेष रूप से उपस्थित थे। मॉडरेटर की भूमिका का निर्वाहन डॉ. सिद्धार्थ शर्मा ने किया।

नव भारत
GWALIOR DATE-13.6.2021 PAGE-3

एमिटी में अवॉइडिंग प्रिडेटरी पब्लिकेशन्स पर वेबिनार

नवभारत न्यूज

ग्वालियर 12 जून. सेंटर ऑफ एक्सीलेंस फॉर डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉर्मेशन, एमिटी यूनिवर्सिटी मध्य प्रदेश में अवॉइडिंग प्रिडेटरी पब्लिकेशन्स- व्हाट रिसर्चर्स कैन डू विषय पर एक वेबिनार आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के चीफ पैट्रन (डॉ.) असीम चौहान, अति. अध्यक्ष, आरबीईएफ, चांसलर व अध्यक्ष, एयूएमपी रहे। कार्यक्रम के शुभारंभ में कुलपति लेफ्टीनेंट जनरल वीके शर्मा, एवीएसएम ने अपने ओजस्वी संबोधन में डिटेक्शन ऑफ फेक न्यूज एंड डिसइनफॉर्मेशन पर विस्तृत जानकारी साझा की।उन्होंने बताया कि फेक, प्रिडेटरी और क्लोन जर्नल्स की पहचान करना और शोधकार्यों की सुरक्षा सभी शिक्षाविदों और शोधार्थियों के लिए चिंता का विषय है।

कार्यक्रम के मुख्य संयोजक एवं रिसोर्स पर्सन (डॉ.) सुमित नरूला, निदेशक एमिटी स्कूल ऑफ कम्युनिकेशन ने हाऊ टू कैच फैक, प्रिडैटरी व कलोंड जर्नल्ज इन एकैडमिक्स विषय पर विस्तार से बताया। उन्होंने उदाहरणों के साथ बताया कि क्लोन किए गए जर्नल वेब पेज, एक प्रामाणिक जर्नल की मिरर इमेज है, जो वैध जर्नल्स के शीर्षक और आईएसएसएन का फायदा उठाते हैं। प्रिडेटरी जर्नल्स के विपरीत, क्लोन जर्नल्स में लेखकों के शोध कार्य स्वीकार करने की अधिक संभावना होती है।

डॉ नरूला ने फेक जर्नल्स की सटीक जानकारी साझा करते हुए कहा कि कुछ संपादक एक संशोधित ई-मेल संदेश के माध्यम से लेखकों/ शोधकर्ताओं का सक्रिय रूप से संपर्क करते हैं। और उन्हें प्रिडेटरी/क्लोन जर्नल्स में प्रकाशित करने का दावा करते हैं। उन्होंने बताया कि लेखकों और रिसर्चरों को ऐसे अनुरोधों द्वारा एक ओपन-एक्सेस से प्रकाशन शुल्क का भुगतान करने के लिए प्रेरित किया जाता है। वहीं उन्हें यह विश्वास दिलाने में सफल रहते हैं कि उनका शोध कार्य एक प्रतिष्ठित पत्रिका में प्रकाशित होने वाला है। उन्होंने रिसर्च जर्नल्स के क्षेत्र में इस्तेमाल किये जाने वाली टर्मिनोलॉजी ई- पैक्ट फैक्टर, साईटेशन इंडैक्स, एच-इंडैक्स, जीआईएफ के बारे में विस्तार से समझाया।इस अवसर पर एमिटी एसटीआईएफ के अध्यक्ष प्रोफेसर एस सेल्वामूर्ति, प्रो वाइस चांसलर प्रोफेसर (डॉ) एमपी कौशिक विशेष रूप से उपस्थित थे। मॉडरेटर की भूमिका का निर्वाहन डॉ सिद्धार्थ शर्मा ने किया।

सुनील गोयल

ਜਲੰਧਰ ਬਾਣੀ

ਦੋਆਬਾ ਕਾਲਜ 'ਚ ਪ੍ਰਿਡੇਟਰੀ, ਕਲੋਨ ਅਤੇ ਫੇਕ ਰਿਸਰਚ ਜਰਨਲਜ਼ 'ਤੇ ਵੈਬੀਨਾਰ

ਦੋਆਬਾ ਕਾਲਜ ਵਿਖੇ ਅਯੋਜਿਤ ਵੈਬੀਨਾਰ ਵਿਚ ਡਾ. ਸੁਮਿਤ ਨਰੂਲਾ ਅਤੇ ਹੋਰ।

ਜਲੰਧਰ, 15 ਜਨਵਰੀ (ਵਿਸ਼ੇਸ਼)- ਦੋਆਬਾ ਕਾਲਜ ਦੇ ਪੀ. ਜੀ. ਡਿਪਾਰਟਮੈਂਟ ਆਫ ਜਰਨਲਿਜ਼ਮ ਐਂਡ ਮਾਸ ਕਮਿਊਨੀਕੇਸ਼ਨ ਵਿਭਾਗ ਵੱਲੋਂ ਕਾਲਜ ਦੇ ਆਕਿਊਏਸੀ ਦੇ ਸਹਿਯੋਗ ਨਾਲ ਡਿਕਲਟਰਿੰਗ ਦੇ ਕਲਕਟਰ-ਫੇਕ, ਪ੍ਰਿਡੇਟਰੀ ਅਤੇ ਕਲੋਨ ਜਰਨਲਜ਼ ਇਨ ਅਕੈਡਮਿਕਸ ਵਿਸ਼ੇ 'ਤੇ ਵੈਬੀਨਾਰ ਦਾ ਅਯੋਜਨ ਕੀਤਾ ਗਿਆ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਡਾ. ਸੁਮਿਤ ਨਰੂਲਾ, ਐੱਮ. ਆਈ. ਟੀ. ਸਕੂਲ ਆਫ ਕਮਿਊਨੀਕੇਸ਼ਨ ਐਂਡ ਡਾਇਰੈਕਟਰ, ਐੱਮ. ਆਈ. ਟੀ. ਯੂਨਿਵਰਸਿਟੀ, ਗਵਾਲੀਅਰ ਬਤੌਰ ਰਿਸੋਰਸ ਪਰਸਨ ਹਾਜ਼ਰ ਹੋਏ, ਜਿਨ੍ਹਾਂ ਦਾ ਨਿੱਘਾ ਸਵਾਗਤ ਪ੍ਰਿੰ. ਡਾ. ਨਰੇਸ਼ ਕੁਮਾਰ ਧੀਮਾਨ, ਪ੍ਰੋ. ਸੰਦੀਪ ਚਾਹਲ-ਸੰਯੋਜਨ ਆਈਕਿਊਏਸੀ, ਡਾ. ਸਿਮਰਨ ਸਿੱਧੂ-ਵਿਭਾਗ ਮੁੱਖੀ, ਅਧਿਆਪਕਾ ਅਤੇ ਵਿਦਿਆਰਥੀਆਂ ਨੇ ਕੀਤਾ।

ਡਾ. ਸੁਮਿਤ ਨਰੂਲਾ ਨੇ ਫੇਕ, ਕਲੋਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਿਡੇਟਰੀ ਜਰਨਜ਼ ਬਾਰੇ ਮੌਜੂਦ 89 ਪਾਰਟੀਸੀਪੈਂਟਸ ਨੂੰ ਪ੍ਰੈਕਟਿਕਲ ਟ੍ਰੇਨਿੰਗ ਅਤੇ ਉਦਾਹਰਣ ਦਿੰਦੇ ਹੋਏ ਦੱਸਿਆ ਕਿ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਕਲੋਨ ਜਰਨਜ਼ ਦੀ ਵੈਬਸਾਇਡ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਇੰਟਰਨੈਟ ਟੂਲਜ਼ ਦੀ ਮਦਦ ਨਾਲ ਪਛਾਣ ਕੀਤੀ ਜਾਂਦੀ ਹੈ, ਜਿਸ ਵਿਚ ਆਮ ਤੌਰ 'ਤੇ ਸਕੋਪਸ ਲੈਂਕਸ, ਯੂ. ਜੀ. ਸੀ. ਕੇਅਰ ਲਿਸਟ, ਬਿਬਲੀਓਮੈਟ੍ਰਿਕ ਟੂਲਜ਼, ਡਿਜੀਟਲ ਆਬਜੈਕਟ, ਆਈਡੈਂਟੀਫਾਇਰਸ ਅਤੇ ਆਰਸਿਡ ਆਈ. ਡੀ. ਆਦਿ ਦੀ ਸਹਾਇਤਾ ਲਈ ਜਾਂਦੀ ਹੈ।

ਡਾ. ਸੁਮਿਤ ਨੇ ਇਨ੍ਹਾਂ ਫੇਕ, ਕਲੋਨ ਅਤੇ ਪ੍ਰਿਡੇਟਰੀ ਜਰਨਜ਼ ਨੂੰ ਫੜਨ ਲਈ ਜਰਨਜ਼ ਮੈਟ੍ਰਿਸਜ਼ ਦੇ ਅਧੀਨ ਪਛਾਣ ਚਿੰਨ੍ਹ ਦੱਸਦੇ ਹੋਏ ਕਿਹਾ ਕਿ ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਰਨਜ਼ ਵਿਚ ਰਿਸਰਚ ਪੇਪਰ ਸਬਮਿਟ ਕਰਨ ਦੀ ਕੋਈ ਵੀ ਡੈਡਲਾਇਨ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ, ਰਿਸਰਚ ਪੇਪਰ 24 ਘੰਟਿਆਂ ਵਿਚ ਛਾਪ ਦਿੱਤਾ ਜਾਂਦਾ ਹੈ ਅਤੇ ਇਹ ਸਾਲ ਵਿਚ 12 ਮਹੀਨਿਆਂ ਦੀ ਦਰ 'ਤੇ ਛਪਦੇ ਹਨ, ਐਡੀਟਰ ਦੀ ਕੋਈ ਕਾਂਟੈਕਟ ਡਿਟੇਲ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ, ਇਕ ਨਾਲ ਕਈ ਵਿਸ਼ਿਆਂ 'ਤੇ ਪੇਪਰ ਛਾਪਣ ਦੀ ਗੱਲ ਕੀਤੀ ਗਈ ਹੁੰਦੀ ਹੈ ਜਦਕਿ ਇਹ ਜਰਨਜ਼ ਉਸ ਵਿਸ਼ੇ ਦਾ ਹੁੰਦੀ ਹੀ ਨਹੀਂ, ਇਸ ਦੀ ਗੂਗਲ ਇੰਡੈਕਸਿੰਗ ਵੀ ਨਹੀਂ ਹੁੰਦੀ, ਇਸ ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਜਰਨਲਜ਼ ਯੂ. ਜੀ. ਸੀ. ਅਤੇ ਸਕੂਪਸ ਦੇ ਲੋਗੋ ਵੀ ਲਗਾ ਲੈਂਦੇ ਹਨ ਜਦਕਿ ਨਹੀਂ ਲਗਾ ਸਕਦੇ। ਪ੍ਰੋ. ਪ੍ਰਿਯਾ ਚੋਪੜਾ ਨੇ ਰਿਸੋਰਸ ਪਰਸਨ ਅਤੇ ਪਾਰਟੀਸਿਪੈਂਟਸ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ ਕੀਤਾ। ਇਸ ਮੌਕੇ ਪ੍ਰੋ. ਚਾਂਦਨੀ, ਪ੍ਰੋ. ਹਰਮਨ, ਪ੍ਰੋ. ਦੀਪਕ ਸ਼ਰਮਾ, ਪ੍ਰੋ. ਮੰਜੂ ਹਾਜ਼ਰ ਸਨ।

'एकैडेमिक्स में प्रिडेटरी, क्लोंड व फेक रिसर्च जर्नल्ज पर वैबीनार आयोजित'

जालन्धर, 15 जनवरी (विशेष): दोआबा कालेज के स्नातकोत्तर जर्नलिज्म एवं मास कम्यूनिकेशन विभाग द्वारा कालेज के आई.क्यू.ए.सी. के सहयोग से डीकल्टिंग द कल्टर-फेक, प्रिडेटरी व क्लोंड जर्नल्ज इन एकैडेमिक्स विषय पर वैबीनार आयोजित किया गया जिसमें डा. सुमित नरूला एम.आई.टी. स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन एवं डायरैक्टर ग्वालियर बतौर रिसोर्सपर्सन उपस्थित थे, जिनका अभिनन्दन प्रिं. डा. नरेश कुमार धीमान, प्रो. संदीप चाहल, डा. सिमरन सिद्धू- विभागाध्यक्षा, प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने किया।

दोआबा कालेज में आयोजित वैबीनार में डा. सुमित नरूला उपस्थिति को सम्बोधन करते हुए।

डा. सुमित नरूला ने फेक, क्लोंड व प्रिडेटरी जर्नल्ज के बारे में 89 पार्टिसिपेंट्स को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग व उदाहरण देते हुए बताया कि आम तौर पर क्लोंड जर्नल्ज की वैबसाइट को कैसे इंटरनैट टूल्ज की सहायता से पहचाना जाता है, जिसमें साधारणतया स्कोप्स लिंक्स, यू.जी.सी. केयरलिस्ट, बिबलीयो मैट्रिक टूल्ज, डिजीटल ऑब्जैक्ट, आइडैंटीफायर्स तथा ओरसिड आई.डी. आदि की सहायता ली जाती है।

उन्होंने सभी रिसर्चर को अपनी ओरसिड आई.डी.-डिजीटल आईडैंटीफायर पहचान बनाने पर जोर दिया जिससे कि उनके लिखे गए शोध पत्र की कोई और नकल न मार सके। प्रो. प्रिया चोपड़ा ने रिसोर्सपर्सन एवं पार्टिसिपेंट्स का धन्यवाद किया। इस मौके पर प्रो. चांदनी मेहता, प्रो. हरमन, प्रो. दीपक शर्मा, प्रो. मंजू उपस्थित थे।

पंजाब केसरी ई-पेपर
Sat,16 January 2021
Edition: jalandhar kesari, Page no. 3

दैनिक भास्कर

जालंधर भास्कर 16-01-2021

बच्चों और बुजुर्गों ने केंद्र सरकार के खिलाफ जमकर ... रधावा मसंदा में पहुंचक

एकेडमिक में प्रिडेटरी, फेक रिसर्च जर्नल्स पर वेबिनार

जालंधर | दोआबा कॉलेज के जर्नलिज्म एवं मास कम्युनिकेशन विभाग द्वारा एकेडमिक में प्रिडेटरी, क्लोन और फेक रिसर्च जर्नल्स पर वेबिनार करवाया गया। कॉलेज के आईक्यूएसी के सहयोग से करवाए गए इस वेबिनार में डॉ. सुमित नरूला रिसोर्सपर्सन के तौर पर शामिल हुए।

डॉ. नरूला ने फेक, क्लोन व प्रिडेटरी जर्नल्स के बारे में उपस्थिति को प्रेक्टिकल ट्रेनिंग और उदाहरण देते हुए बताया कि आमतौर पर क्लोन्ड जर्नल्स की वेबसाइट को कैसे इंटरनेट टूल्स की सहायता से पहचाना जाता है, जिसमें साधारणता स्कोप्स लिंक्स, यूजीसी केयरलिस्ट, बिबलीयोमेट्रिक टूल्ज, डिजिटल ऑब्जेक्ट और ओरसिड आईडी आदि की सहायता ली जाती है। सभी रिसर्चर को ओरसिड आईडी-डिजीटल आइडेंटी फायर पहचान बनाने पर जोर दिया, जिससे कि उनका लिखे शोधपत्र को कोई ओर नकल न मार सके। प्रो. प्रिया चोपड़ा ने रिसोर्स पर्सन एवं पार्टिसिपेंट्स का धन्यवाद किया। यहां प्रिं. डॉ नरेश कुमार धीमान, प्रो. संदीप चाहल, विभाग की हेड डॉ. सिमरन सिद्धू, प्रो. चांदनी मेहता, प्रो. हरमन, प्रो. दीपक शर्मा, प्रो. मंजू मौजूद रहे।

Identifying fake, cloned journals

Webinar held at Doaba College

TRIBUNE NEWS SERVICE

JALANDHAR, JANUARY 17

The PG Department of Journalism and Mass Communications of Doaba College organised a webinar in collaboration with Internal Quality Assurance Cell (IQAC) on 'Decluttering the Clutter- Fake, Cloned and Predatory Journals in Academics'.

Dr Sumit Narula, Amity School of Communication and Director Amity University, Gwalior graced the occasion as a resource person. He was accorded a warm welcome by Principal Dr Naresh Kumar Dhiman, Prof Sandeep Chahal-IQAC Coordinator, Dr Simran Sidhu, head, faculty, and 89 participants.

Dr Sumit Narula demonstrated the difference between fake, cloned and predatory journals by using internet tool viz Scopus Links, UGC Care List, Digital Object Identifier, ORCID, bibliometric analysis and identifying cloned websites.

Dr Sumit said the fake and cloned journals have no deadline for the submission of research paper and they print it within 24 hours.

Such journals are published in all 12 months, there is no contact detail of editor and the names in the editorial board are without requisite profiles. Such journals unnecessarily use UGC and Scopus Logos in their websites which is against the norms.

Dr Sumit emphasised on digital identity so that no one is able to copy their research and should also take help of Google alert internet tool to safeguard themselves. He also discussed in detail the other relevant terminology viz impact factor, citation index, h-index, GIF etc, used in research.

जन संगठन

Monday, January 18, 2021

एकैडमिक्स में प्रिडैटरी, कलोन व फेक रिर्सच जर्नल्ज पर वैबीनार आयोजित

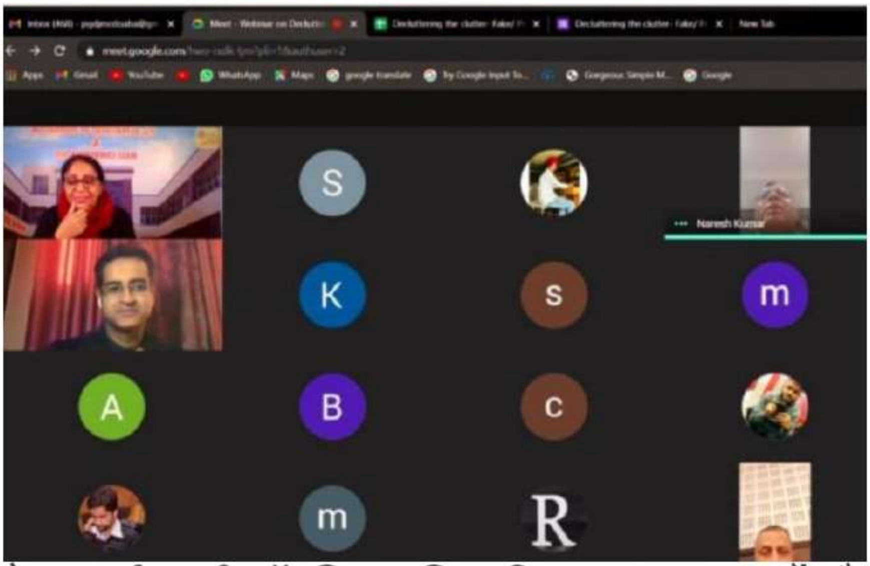

जालन्धर : दोआबा कालेज के स्नातकोत्तर जर्नालिज्म एवं मासक्म्युनिकेशन विभाग द्वारा कालेज के आईक्यूएसी के सहयोग से डीकल्टङ्करग द कल्टर-फैक, प्रिडैटरी व कलोंड जर्नल्ज इन एकैडमिक्स विषय पर वैबीनार का ओयजन किया गया जिसमें डॉ. सुमित नरूला- एमआईटी स्कूल ऑफ कम्यूनिकेशन एवं डायरैक्टर, एमआईटी यूनिवर्सिटी, गवालियर बतौर रिसोर्स पर्सन उपस्थित हुए जिनका हार्दिक अभिनन्दन प्रिं. डॉ. नरेश कुमार धीमान, प्रो. संदीप चाहल-संयोजन आईक्यूएसी, डॉ. सिमरन सिद्धू- विभागाध्यक्षा,प्राध्यापकों और विद्यार्थियों ने किया ।

डॉ. सुमित नरूला ने फेक, कलोंड व प्रिडैटरी जर्नल्ज के बारे में उपस्थित 89 पार्टिसीपैंटस को प्रैक्टिकल ट्रैनिग व उदाहरण देते हुए बताया कि आम तौर पर कलोंड जर्नल्ज की वैबसाईड को कैसे इंटरनेट टूल्ज की सहायता से कैसे पहचाना जाता है जिसमें साधारणता स्कोपस लिंक्स, यूजीसी केयरलिस्ट, बिबलीयोमैट्रिक टूल्ज, डिजीटल ऑबजैक्ट, आईडैंटीफायरस तथा ओरसिड आईडी आदि की सहायता ली जाती है ।

डॉ. सुमित ने इन फेक , कलोंड व प्रिडैटरी जर्नल्ज को पकडऩे हेतु जर्नल्ज मैट्रिसज के अन्तर्गत पहचान चिन्ह बताते हुए कहा कि ऐसे जर्नल्ज में रिर्सच पेपर सबमिट करने की कोई डैडलाईन नहीं होती, रिर्सच पेपर 24 घण्टों में छाप दिया जाता है और यह साल में 12 महीने की दर पर छपते हैं, ऐडिटर की कोई कांटैक्ट डिटेल नहीं होती, एक साथ कई विषयों पर पेपर छापने की बात की गई होती है जब कि वह जर्नल उस विषय का नहीं होता, इसकी गूगल इंडैक्सिंग भी नहीं होती, ऐसे जर्नल्ज यूजीसी व स्कूपस के लोगो भी लगा लेते हैं जोकि नहीं लगाये जा सकते ।

उन्होंने सभी रिर्सचर को अपनी ओरसिड आईडी-डिजीटल आईडैंटी फायर पहचान बनाने पर जोर दिया जिससे कि उनका लिखा गया शोध पत्र को कोई ओर नकल न मार सके और उसकी साईटेशन्स बढ़े । उन्होंने कहा कि आमतौर पर कलोंड जर्नल्ज संचालित करने वाले विभिन्न लेखकों को मॉडिफाईड ई-मेल के द्वारा पीछा करते हैं तथा उन्हें ओथैंटिक जर्नल्ज के नाम, आईएसएसएन व ईमेज्स आदि की नकल कर कलोंड जर्नल्ज की नकली वेबसाईड बनाते हैं जिसमें ऐडीटोरियल बोर्ड में शामिल विशेषज्ञों के नाम उनके प्रोफाईल के बगैर ही देते हैं ।

उन्होंने शोध जर्नल्ज के क्षेत्र में इस्तेमाल किये जाने वाली टर्मिनोलॉजी इम्पैक्ट फैक्टर, साईटेशन इंडैक्स, एच-इंडैक्स, जीआईएफ के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी । प्रो. प्रिया चोपड़ा ने रिसोर्स पर्सन एवं पार्टिसीपैंट्स का धन्यवाद किया । इस मौके पर प्रो. चांदनी मेहता, प्रो. हरमन, प्रो. दीपक शर्मा, प्रो. मंजू उपस्थित थे ।